पेट्रोलियम प्रोडक्ट्स का कोई substitute पैदा किया है? जैसे डीजल है, केरोसीन है, पेट्रोल है, सी.एन.जी. है और दूसरे अन्य प्रोडक्ट्स हैं। जब तक आप इनका कोई substitute पैदा नहं करेंगे, तब तक फॉरेन अर्निग्ज़ का यह गैप पूरा नहीं हो सकता है ।

श्री सभापति : मंत्री जी, आप गैप पूरा करने की चिंता कीजिए ।

श्री राम नाईक : सभापति जी, गैप पूरा करने के लिए देश में हम और एक्सप्लोरेशन करने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन और दो बातों की जानकारी सदन को भी होनी चाहिए कि कोल्ड बैग मीथेन हम निर्माण करना शुरू कर रहे हैं। फिर देश में हमने ईथनॉल शुरू कर दिया है, अभी एक साल हो गया है पांच परसेंट । इसके कारण देश में और ऊर्जा का निर्माण हो सकता है और फॉरेन से जो इम्पोर्ट होता है, वह कम हो सकेगा।

पेट्रोलियम पदार्थो का आयात और निर्यात

*111. **श्री कपिल सिब्बल :++**
श्री लाजपत राय :

क्या पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि वर्ष 2002-03 के दौरान अनेक पेट्रोलियम पदार्थो का आयात और निर्यात किया गया; ,

(ख) यदि हां, तो उपरोक्त अवधि में किस-किस पदार्थ का कितना-कितना तथा कितने-कितने मूल्य का आयात व निर्यात किया गया;, और

(ग) इस प्रकार आयात एंव निर्यात किये गये प्रत्येक पदार्थ की औसत विक्रय दर व क्रयदर क्या-क्या थी?

पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री (श्री राम नाईक) : (क) से (ग) एक विवरण सदन के पटल पर रख दिया गया है।

विवरण

(क) जी, हां ।

++ यह प्रश्न सभा में श्री कपिल सिब्बल द्वारा पूछा गया।

(ख) और (ग) वर्ष 2002-03 के दौरान कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस से उत्पादित पेट्रोलियम उत्पदों के आयात और निर्यात का ब्यौरा मात्रा, मूल्य और औसत मूल्य सहित नीचे दिया गया है:-

उत्पाद	**मात्रा (हजार मीट्रिक टन में)**	**मूल्य (करोड़ रूपए मे)**	**मूल्य (रूपये/मीट्रिक टन)**
आयात			
नाफ्या	2,784	3,551	12,755
ईधन तेल	1,256	1,084	8,631
एल पी जी	1,073	1,867	17,400
कम गंधक वाला मोम अवशिष्ट	964	875	9,077
मिट्टी तेल	698	808	11,576
स्नेहक	340	526	15,471
डीजल	106	119	11,226
अन्य*	7	17	-
योग	7,228	8,847	
निर्यात			
नाफ्या	2,067	2,325	11,248
ईधन तेल	1,120	902	8,054
स्नेहक	23	24	10,435
डीजल	3,178	3,547	11,161
पेट्रोल	2,336	3,011	12,890
कोक	700	45	643
विमानन इंजिन ईंधन	697	790	11,334
टर्शरी आमिल मिथाइल ईथर	90	139	15,444
वैकुअम गैस तेल	78	85	10,897
योग	10,289	10,868	

***अन्य में विमान पेट्रोल, प्रोपीलीन, जाईलीन, पैरा-जाईलीन और विलायक जैसे उत्पाद शामिल है ।**

Import and Export of petroleum products

††111. SHRI KAPIL SIBAL:*

SHRI LAJPAT RAI: Will the Minister of PETROLEUM AND NATURAL GAS be pleased to state:

(a) whether it is a fact that a number of petroleum products have been imported and exported during the year 2002-2003;

(b) if so, the name of each product imported and exported during the abovesald period alongwith the quantum and value thereof, separately; and

(c) the average sale price and purchase price respectively of each product so imported and exported?

THE MINISTER OF PETROLEUM AND NATURAL GAS (SHRI RAM NAIK):(a) to (c) A Statement is laid on the Table of the House.

Statement

(a) Yes, Sir.

(b) and (c) The details of imports and exports of petroleum products, produced from crude oil and natural gas, during the year 200203, alongwith the quantity, value and average price are given below:

Products	Quantity (in Thousand Metric Tonne)	Value (in Rs. Crore)	Price (Rs./Metric Tonne)
1	2	3	4
Imports			
Naphtha	2,784	3,551	12,755
Fuel Oil	1,256	1,084	8,631
LPG	1,073	1,867	17,400
Low Sulfur Waxy Residue	964	875	9,077
Kerosene	698	838	11,576
Lubes	340	526	15,471
Diesel	106	119	11,226
Others*	7	17	—
TOTAL	7,228	8,847	

†Original notice of the question was received in Hindi.

††The question was actually asked on the floor of the House by Shri Kapil Sibal.

1	2	3	4
Exports			
Naphtha	2,067	2,325	11,248
Fuel Oil	1,120	902	8,054
Lubes	23	24	10,435
Diesel	3,178	3,547	11,161
Petrol	2,336	3,011	12,890
Coke	700	45	643
Aviation Turbine Fuel	697	790	11,334
Tertiary Amyl Methy!			
Ether	90	139	15,444
Vacuum Gas Oil	78	85	10,897
TOTAL :	10,289	10,868	

*Others include products like aviation petrol, propylene, xylene, para-xylene and solvent.

SHRI KAPIL SIBAL: I would like to ask this of the hon. Minister. If the answer is looked at, you will find that there are many common items both in the export and the import and if you look at the price differential, the price differential is rather starting. In other words, a lot of these items, which are common, you are importing at very high prices and exporting at low prices. Is there any necessity to do that? Can you make any savings in that context?

SHRI RAM NAIK: Sir, some of the items are being imported, for example, *naptha.* Now, *naptha,* if it is imported, there is no sales tax. That is why, it becomes cheaper. And, in India, if the refineries are having naptha in surplus, they are required to export. So, some items would come and some items would go and that would depend on the position in the international market. Sometimes, if we are to sell some things, we

may get lesser price because we do not need them. So, that's the way, we are trying to balance. But, in spite of that, since any item can be imported, quite naturally, we are importing kerosene in a big way. Now, we found that kerosene is being misused, so we have stopped that. In that way, we are keeping a vigil and trying to ensure that undue things are not being done.

SHRI KAPIL SIBAL: You have not stopped the import of kerosene, that is incorrect of the statement of fact. What you have done is to channelise the import of kerosene through certain public sector companies like HPCL and others. So, you have not stopped the import of kerosene. That is a factually incorrect statement.

SHRI RAM NAIK: We have stopped misuse. And, that is the way of stopping the misuse.

SHRI KAPIL SIBAL: You have made incorrect statement. You should know your own policy at least.

SHRI RAM NAIK: I know it, that is why, I said misuse.

SHRI KAPIL SIBAL: What is surprising is you have such a huge refining capacity in India. Then why do you need to import? You import crude oil and you make the final product at home. Why do you need to import kerosene?

SHRI RAM NAIK: We are having refining capacity, that is why, we are adding value and, that is why, in refining, many times we get petrol and diesel in excess. That is what we are exporting.

लाला लाजपत राय : सर मैंने डीटेल में पढ़ा है , उसमें सिब्बल साहब ने काफी बातें कही हैं, जैसे कि हमारी रिफाइनिंग कैपेसिटी 114 मिलियन टन है और हमारी जरूरत है 103-104 मिलियन टन । उनका बेसिक तो क्रूड ऑयल ही है तो हम अपने प्रोडक्शन में ऐडजस्टमेंट क्यों नहीं कर सकते जिससे कि हमारा इम्पोर्ट बिलकुल ही खत्म हो जाए और एक्सपोर्ट शुरू हो जाए? जब इतनी कैपेसिटी है तो हम उसको इस्तेमाल कर सकते हैं और क्रूड से डीजल भी बना सकते हैं, पेट्रोल भी बन सकते हैं।

श्री राम नाईक : सभापति जी, यह एक गलत धारणा है कि हमारी रिफाइनिंग कैपेसिटी सरप्लस है । रिफाइनिंग कैपेसिटी में अब हम सेल्फ साफिसिएंट हो गए हैं, यह बात है इसलिए पहले की तरह हम डीजल या पेट्रोल इम्पोर्ट नहीं करते हैं। क्रूड ऑयल पर वैल्यू ऐडेड होकर जब कभी-कभी वह सरप्लस होता है, तो हम उसे एक्सपोर्ट करत हैं, इसलिए एक ठीक पद्धति से यह काम चल रहा है।